समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्षः– 17 पृष्ठः– 4 अंक :– **20** संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

करोड़ों की आस्था पर कीचड़ उछालने से क्या होगा ?

डॉ. किशन कछवाहा

मुसलमानों को पाकिस्तान नामक इस्लामी राज्य देने के बाद ही 15 अगस्त सन् 1947 को भारत स्वतंत्र राष्ट्र बना था। उसकी पंथनिरपेक्षता भी सिर्फ उसकी हिन्दू बहुल आबादी के कारण ही बनी रह सकी है। यदि मसलमानों की आबादी अधिक होती तो क्या यह राष्ट्र पंथनिरपेक्ष (सेकुलर) रह पाता ? इस तथ्य को गंभीरता से समझ लेने की जरूरत है। आम मुसलमानों के लिये जितना मक्का– मदीना महत्वपूर्ण है उतना ही आम हिन्दू के लिये अयोध्या का श्री रामजन्म भूमि मंदिर, काशी का विश्वनाथ मंदिर, मथुरा की कृष्ण जन्म भूमि का महत्व है। इनसे जुड़ा विवाद देशहित में खत्म होना चाहिये। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने भी सन् 2010 के अपने फैसले में विवादित स्थल को ही श्री रामजन्म भूमि माना है। मुसलमानों का एक बड़ा वर्ग इस मामले का हल निकालने पहले भी सहमत था और आज भी सहमत है। लेकिन इरफान हबीब जैसे वामपंथी इतिहासकारों ने मुसलमाानों को बरगलाने में बड़ी भूमिका निबाही है। उन्होने बरगलाया कि उसमें कुछ नही है जिसके कारण दुबारा खुदायी करायी गयी। इस मामले में राजनीति की तह में जड़ जमाता कुछ लोगों का अड़ियलपन है जो जनभावनाओं को तुच्छ मानने और जनतंत्र को बौना साबित करने तुले हुये है। उत्तरप्रदेश के समाज वादी पार्टी के एक मुसलमान मंत्री आजमखान ने भारत माता को ''डायन'' तक कहा था। अब उसी पार्टी के सांसद नरेश अग्रवाल ने हिन्दू देवी–देवताओं पर लोकसभा में आपत्तिजनक टिप्पणी की। नेता भूल रहे है' कि भारतीय लोकतंत्र में किसी का कद इतना बड़ा नही है कि वह पूरे देश की आस्था को ठेस पहुॅचाये। इस दृष्टता के पीछे कौन सा षड़यंत्र काम कर रहा है– इसे समझने की जरूरत है। करोड़ो लोगों की आस्था से जुड़े पावन नामों पर कीचड़ उछालते सपा सांसद को तनिक भी हिचक और शर्म महसूस न हो–उनका हदय यह कैसे बर्दास्त कर गया। सदियों से ठंड, वर्ष, गर्मी के परवाह न करते हुये भगवान श्री राम की एक झलक पाने के लिये देश के विभिन्न हिस्सों से नंगे पैर श्रद्धालु अयोध्या के मंदिर परिसर में आते रहे हैं। उनकी भावनाओं और संवेदनाओं को ध्यान में क्यों नही रखा जाना चाहिये ? प्रख्यात पुरातत्ववेत्ता और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के पूर्व क्षेत्रीय निदेशक (उत्तर) श्री के.के मुहम्मद सन् 1978 में डॉ. बी.बी. लाल के नेतृत्व वाली उस टीम के सदस्य थे जिसने अयोध्या में उत्खनन का कार्य सम्पन्न कराया था। श्री मुहम्मद ने साक्ष्यों के आधार पर तब भी कहा था। कि अयोध या में विवादित ढ़ॉचा हिन्दू–मंदिरों के अवशेष पर खड़ा किया गया। उन्होंने अपनी पुस्तक ''जानेन्ना भारतीयन '' में भी इसका उल्लेख किया है। उन्होंने यह भी कहा कि '' मेरी किताब का उद्देश्य लोगों के सामने सच्चाई लाना है। इतिहास में कई गम्भीर गलतियॉ हुयी है। हमें यह जरूर सुनिश्चित करना चाहिये कि ऐसी गलतियॉ दोबारा नही हों। सन् 1978 और उसके बाद के वर्षो में अनेक बार अयोध्या में विवादित स्थल के आसपास खुदाई की गई । हर बार वहॉ पुराने हिन्दू मंदिरों के अवशेष मिलें। साथ ही हिन्दू देवताओं की प्रतिभायें और पत्थर के (शिलालेख) पदिृकाये मिली जिसपर लिखा है – मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है। अयोध्या विवाद पर इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने अपने फैसले (2010,मे कहा था कि यह' स्पष्ट्र है कि हमारे शासन कर्त्ताओं तथा न्यायालयों में अयोध्या विवाद ही नही पंथनिरपेक्षता और अपराध के भाव अर्थो पर स्पष्ट्रता ही कि नहीं। इस कारण सन् 49 से अयोध्या मामला न्यायालयों की फाइलों में विद्यमान है। इस कमजोरी को मुसलमान नेता भी समझते है तथा उसका बेहतरीन तरीके से उपयोग भी करते हैं। इसको स्पष्ट्र करने के लिये एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा। सऊदी विद्वान अब्दुल रहमान बिन हम्माद–अल–उमर ने अपनी पुस्तक' द रिलीजन आफ ट्रुथ (1991) में लिखा है कि '8 मुस्लिम शासन वाले देश में गैर–मुस्लिम को अपने विश्वास की आजादी है किन्तु उसे समर्पित होकर सदैव मुसलमानों को आदर, नजराना देना होगा, इस्लामी कानूनों के सामने आत्मसमर्पण करना होगा और अपने बहुदेव–पंथीरिवाजों का पालन सार्वजनिक रूप से नही करना होगा। इसका सीधा अर्थ स्पष्ट्र है और मुस्लिम नेताओं में आज भी इसी जिद को देखा–समझाा जा सकता है।

करोड़ो की अस्था पर कीचड़ उछालने की दृष्टता

यही जिद है जो श्रीरामनवमी – दशहरे या अन्य हिन्दू त्यौहारों जूलूसो के दौरान ढ़ोल, कीर्तन आदि पर देखी जाती है। वे अपने त्यौहार–पर्व सार्वजनिक रूप से क्यों नही मना सकते। जिन्ना ने मुसलमानों के (मास्टर रेस) मालिक कौम होने के दावे से पाकिस्तान मॉगा था। यही भाव था कि आखिर अखंड भारत में मालिक और नौकर कैसे बराबरी से रहेंगे ? वही भाव कहीं न कही मुसलमान नेताओं में बचा हुआ है। इसी लिये मुसलमान ऐसे बहुत से विशेषाधिकार चाहते हैं। मुफ्ती मेडम् (मुख्यमंत्री) कश्मीर ने 35 ए पर ऐसा ही सवाल खड़ाकर स्पष्ट्र रूप से एक धमकी भी देदी है कि यदि इस धारा को समाप्त किया जाता है तो कश्मीर में कोई तिरंगा झंडा उठाने वाला भी नही रहेगा। वे काफिरों, मूर्तिपूजकों, बन्दे मातरम् राष्ट्रगान आदि की अवहेलना करेंगे – निन्दा करते रहेंगे। क्यों कि यह उनका तजहबी मामला है। कोलकाता की टीपू सुल्तान मस्जिद के शाही इमाम ने देश के प्रधानमंत्री के बारे में क्या अनाप–शनाप नही बोला ? ऐसी अनदेखी से पंथनिरपेक्षता को कैसे विस्तार मिलेगा ? सन् 47 में गंभीरता से ध्यान दे दिया गया होता तो न 370 धारा रहती न तीन तलाक जैसे, नारी विरोधी मामलों को अवसर मिलता। यदि मुसलमान नेताओं को खुश करने की बात दिमाग में रही तो कभी न्याय नही हो सकता। ऐसे मसलों के चलते मुसलमानों का भी फायदा नही हो रहा। और वे अधिक कट्टर वादियों के जकड़ में फैसते चले जा रहे हैं। इसका परिणाम यह हो रहा है कि तब्जों कट्टर विचारधारा को मिल रही है जिसका लाभ ओवेसी जैसे लोग उठा रहे है। सुधारवाड़ी मुसलमानों को तो आगे आने का अवसर ही नही मिल पा रहा। अतः अवाश्यक है इस 21वी सदी में सार्थक और सुधारवादी सोच वाले मुसलमानों को आगे आने का अवसर उपलब्ध हो ताकि एक बड़ी आबादी को तरक्की .की राह पर खड़ा किया जा सके। मंदिर का मामला सर्वोच्च न्यायालय में लम्बित है। उच्च न्यायालय ने जो फैसला दिया है उसमें श्री रामजन्मभूमि मंदिर के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। मंदिर था, मंदिर है और मंदिर रहेगा। फिर जिद पर अड़े रहने का मायने क्या है ? गत 482 वर्षो के कालखंड मे चार लाख से अधिक हिन्दुओ ने मंदिर के लिये प्राणों का उत्सर्ग किया है।

राष्ट्र से जोड़ता है वन्देमातरम्

अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में लिखा है – '' माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'' अर्थात मैं भूमि का पुत्र हूं, पृथ्वी हमारी माता है। अनेक देशी व विदेशी विद्वानों ने भारत भूमि के गौरव की प्रशंसा की है। इतिहासकार कर्नल टाड ने यहां तक लिखा है कि मेरा जन्म फिर दोबारा हो तो इस पांवन वीर भूमि पर हो। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस देश में स्वतंत्रता की अलंख जाग्रत की। स्वराज्य की परिभाषा बताई। सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है ''देशवासियों के लिए प्रेरणा दी है जिस देश के पदार्थो से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है और आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जन मिल कर करें। किसी कवि ने कितना सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया हे हालांकि यह एक कल्पना है परन्तु राष्ट्र प्रेम की बात कही है किसी वृक्ष में लगी आग को देखकर पथिक उस वृक्ष के पक्षियों से

आग लगी इस वृक्ष को जलते इसके पात। तुम क्यों जलते पक्षियो जब पंख तुम्हारे साथ।।

कहता है – इस पर वृक्ष पर बैठे पक्षियों ने कहा –कितना

फल खाये इस वृक्ष के गन्दे कीन्हे पात। यही हमारा धर्म है जलें इसी के साथ।।

सुन्दर भाव है इसमें राष्ट्र भक्ति की गहरी भावना झलकती है। जिस देश की मिट्टी में जन्में, पले – बढ़े आज उस मिट्टी से अलगाव हो गया। एक समय था कि स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व हिन्दू क्या मुसलमान सब एक स्वर से वन्दे मातरम् बोलते थे भारत माता का जयघोष करते थे इस राष्ट्र के लिए तन,मन,धन,से समर्पित थे। आज वह समर्पण कहाँ गया। क्यों आज भारत का पुनः सांस्कृतिक, राजनैतिक धार्मिक, सामाजिक विभाजन इनके मस्तिष्क में अंकुरित हो रहा है। कही ऐसा तो नही कि जब इनकी संख्या कम रहती है , तो दोस्ती और भाईचारे की बातें की जाती हैं और जब संख्या अधिक बढ़ जाती है, तब अधिक बढ़ जाते है तो अलगाव की बातें करने लगते है और धीरे–धीरे सामाजिक, सांस्कृतिक, शिक्षा आदि को अलग करते हुए अपना अलग भोगोलिक रूप बना लेने को तैयार रहते हैं वही दशा आज है पाकिस्तान, बांग्लादेश ये हमसे अलग हो गए। आज कश्मीर जल रहा है, कभी खालिस्तान की मांग उठी थी, ऐसा कुविचार जिनके मन मस्तिष्क में आया उन्हें पता नहीं राष्ट्र क्या होता है, राष्ट्रीयता क्या होती है, राष्ट्र क्या होता है, राष्ट्र के आगे वर्ग जाति सम्प्रदाय कोई अर्थ नही रखते और राष्ट्र हेतु प्राणोत्सर्ग भी करना पड़े तो भी कम है। राष्ट्र भक्ति की प्रेरणा वेद से मिलती है और स्वतंत्रता संग्राम में अधिकाँशतः आर्य जन ही थे। यदि् राष्ट्र में रह रहे हैं राष्ट्र की रक्षा में समर्पित हैं तो राष्ट्र हेतु वन्दे मातरम् बोलने में विरोधाभास क्यों। यह सब पूर्व नियोजित व अलगाव की चाल ही है। वीर अब्दुल हमीद, अशफाक उल्लां खां भी तो थे, जिनका नाम आज भी बड़े गौरव से लिया गया है, फिर आज का यह वर्ग इस विचारधारा से अलग क्यों जा रहा है। यह वर्ग यह समझता है कि उनके लिए इस लाभ के आगे सब कुछ व्यर्थ है। राष्ट्र व राष्ट्र भक्ति का कोई अर्थ नहीं। वह युद्ध करते हैं तो इस्लाम के लिए, मरते हैं। तो इस्लाम के लिए। राष्ट्र भक्ति जैसी बात ही नही। यदि राष्ट्र भक्ति की भावना इनमें होती तो वन्दे मातरम् का विरोध न होता। वन्दे मातरम् हमें राष्ट्र से जोड़ता है अतः ऐसी भावना ही विरोध न होता। वन्दे मातरम् जन–जन के हृदय में जाग्रत होनी चाहिए। हमारा इतिहास राष्ट्र प्रेम से भरा हुआ है, वीर बलिदानियों की अमर गाथाएं जितनी इस देश में हैं अन्यत्र नहीं हैं। शिवाजी, महाराणा प्रताप, वन्दा बैरागी, छत्रसाल, रानी लक्ष्मी बाई, नेता जी सुभाष चन्द्र बोस, मंगल पांडे, वीर सावरकर, स्वामी दयानन्द को कौन नहीं जानता। जो राष्ट्र से प्रेम करता है वह राष्ट्र भक्त भी होता है। वन्दे मातरम् में राष्ट्र भक्ति की भावना है। यदि हम सभी इस देश को अपना व अपनी मातृभूमि समझते हैं तो वन्दे मातरम् से परहेज नहीं होना चाहिए।

सुभाषित

नास्ति लोभसमो व्याधिः
नास्ति क्रोधसमो रिपुः।
नास्ति दारिद्रवत् दुःखं
नास्ति ज्ञानात् परं
सुखम्।।

अर्थ – लोभ से बड़ी कोई व्याधि नही है, क्रोध से बड़ा कोई शत्रु नहीं है, दरिद्रता से अधिक कोई दुःख नहीं है और ज्ञान से बढ़कर कोई सुख नहीं है।

कॉग्रेस के सत्ता दर्द को समझा जा सकता है।

— वीरेन्द्र सिंह परिहार

नये राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने अपने शपथ ग्रहण समारोह के दौरान गॉधी के साथ पंडित दीनदयाल उपाध्याय का नाम लेकर जैसे कोई बड़ा अपराध कर दिया हो। विरोधियों का कहना है कि महात्मा गॉधी की तुलना दीनदयाल से की गई ? इसके साथ कांग्रेस जनों को इस बात की भी बड़ी तकलीफ रही कि नये राष्ट्रपति जी ने इस अवसर पर पंडित जवाहर लाल नेहरू और इन्दिरा गॉधी के विषय में उल्लेख क्यो नही किया गया ? इसके पहले जब भाजपा द्वारा उन्हे राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित किया गया तब भी उन्हे तरह–तरह की बाते सुनने को मिली। जैसे वह नरेन्द्र मोदी जी की निजि पसंद है, उन्हे लोग ठीक से जानते तक नही। उनकी काबिलियत पर सवाल उठाये गये । इस संबंध में यह बता देना आवश्यक है कि जहॉ तक नरेन्द्र मोदी जी की निजी पसंद का सवाल है, उनका कही अस्तित्व ही नही है। क्योकि नरेन्द्र मोदी जी की राजनीति न तो व्यक्ति केन्द्रित है और न ही परिवार केन्द्रित, वह सिर्फ विचाराधारा पर केन्द्रित है। जहां तक विचार धारा का सवाल है, तो वह राष्ट्रवादी विचार धारा है जो राष्ट्र को संपन्न, समर्थ और भक्ति संपन्न बनाना चाहती है। कुछ ऐसी ही विचार धारा राष्ट्रपति जी की है, क्योंकि दोनो ही राष्टीय स्वयं सेवक संघ से संबंध रखते है। इस तरह यह मोदी जी की पसंद तो हो सकती है लेकिन निजी पसंद नही। यानी वह पसंद राष्ट्र और समाज के व्यापक परिपेक्ष्य पर आधरित होती है। रामनाथ कोविन्द सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता रह चुके है। दो–दो बार राज्यसभा में रह चुके है। बिहार के राज्यपाल थे ही, जहां उनकी योग्यता के कायल स्वतः बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार थे। उनकी योग्यता का सबसे बड़ा मापदण्ड यही है कि वह 1977 के दौर में तत्कालीन पधानमंत्री मोरारजी देसाई के विशेष सहायक रह चुके है। इसमे कोई दोमत नही है कि मोरारजी देसाई जैसे सख्त मिजाज और दृढ़ सैद्धान्तिक आधार वाले प्रधानमंत्री का विशेष सहायक विशेष योग्यता वाला ही होना चाहिये। इसके अलावा नये राष्ट्रपति ने यह कभी नही कहा कि यदि मोदी कहे तो मैं झाडू लगा सकता हूॅ। उन्होने कभी ऐसा भी नही कहा कि वे किसी खानदान या व्यक्ति का सेवक हूॅ। अब रहा सवाल दूसरी बात का कि अपने शपथ ग्रहण के दौरान उन्होने गॉधी जी की तुलना पंडित दीनदयाल से क्यों कि ? पहली बात तो यह कि गॉधी के साथ किसी के साथ योगदान की तुलना करना उनसे तुलना करना नही है। दूसरे यदि सचमुच में गॉधी के साथ किसी की तुलना हो सकती है तो वह एकात्मवाद के प्रेरणा स्त्रोत पंडित दीनदयाल ही हो सकते है। जहां तक व्यक्तिगत स्तर का प्रश्न है,तो चाहे चरित्र का प्रश्न हो, इमानदारी का सवाल हो, शुचिता और सादगी का प्रसंग हो ? वहां पंडित दीनदयाल कही भी गॉधी जी से उन्नीस नही ठहरते। गॉधी जी यदि लंगोटी लगाते थे तो पंडित दीनदयाल भी भारतीय जनसंघ के महामंत्री होते हुये रेल्वे के तृतीय श्रेणी में यात्रा करते थे। गॉधी जी का तो अपना परिवार था लेकिन पंडित जी का कोई परिवार नही था, वरन संपूर्ण राष्ट्र ही उनका परिवार था। निःसंदेह गॉधी जी का देश की आजादी में बहुत बड़ा योगदान था। पर पंडित दीनदयाल जी ने अनुशासन,जीवन मूल्यों और राष्ट्रवाद के आधार पर ऐसा दल खड़ा किया जो आज देश का सबसे बड़ा ही नही सम्पूर्ण बहुमत के साथ शासन में है। पंडित जी का ''एकात्म मानववाद'' एक ऐसा जीवन दर्शन है, जो भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित है और जीवन को सम्पूर्णता से देखता है। निःसंदेह जब आज के दौर में पूॅजीवाद, साम्यवाद, समाजवाद जैसी विचारधाराऍ एक तरह से कालवाह्य हो चुकी है, वहां एकात्म जीवन दर्शन ही पूरी तरह प्रासंगिक दिखता है। पर कुछ लोगो के लिये पंडित दीनदयाल को गॉधी के साथ इसलिये नही रखा जा सकता क्योंकि उनकी दृष्टि से पंडित दीनदयाल साम्प्रदायिक थे, क्योकि वह हिन्दुत्व के विचारों से ओत–प्रोत थे। वह मुसलमानों की पृथक पहचान पर भरोसा न कर उन्हें संपूर्ण राष्ट्र–जीवन का ही अंग मानते थे। सवाल यह है कि क्यां गांधी हिन्दुत्व के विचारों से ओत – प्रोत नही थे ? तभी तो वह धर्मविहीन राजनीति को भाव के समान मानते थे। उनका कहना था कि गीता के श्लोक और रामायण की चौपाइयॉ उन्हें सूरज न डूब सकने वाले ब्रिटिश साम्राज्य से टकराने की ताकत देती है। 24 अक्टूबर 1909 को लंदन के एक कार्यक्रम में उन्होने कहा था जिस देश में राम जैसे महापुरूष पैदा हुये हो, उस पर हिन्दु – मुसलमान को गर्व करना चाहिये। गॉधी जी और पंडित जी दोनो ही स्वदेशी के घोर पक्षधर थे। सवाल यह है कि नये राष्ट्रति जी ने पंडित जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गॉधी के योगदान को क्यों नही स्मरण किया ? तो क्या महामहिम को उक्त अवसर पर यह बताना उचित होता कि पंडित नेहरू ने पंजाब के तात्कालीन मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरो के भ्रष्टाचरण के मुद्दे पर कहा था कि देश का पैसा देश में ही है, यानी इस तरह से देश के प्रधानमंत्री ने भ्रष्टाचार से समझौते किये, जबकि उसे वह शूरूआती दौर में ही समाप्त कर सकते थे। कुलदीप नैयर ने अपनी किताब 'विटबीन द लाइन्स' में स्वं लाल बहादुर शास्त्री के द्वारा यह कहा गया है कि वह इन्दु अर्थात इन्दिरा गॉधी को प्रधानमंत्री की कुर्सी पर देखना चाहते थे। इस तरह स्वतंत्र भारत में पंडित नेहरू जी को भ्रष्टाचार का वंशवाद का जनक मानना चाहिये। कश्मीर समस्या, मुस्लिम तुश्टीकरण, रक्षा तैयारियों की अनदेखी के लिये सबसे ज्यादा पंडित नेहरू जी को कहा जा सकता है। सबसे बड़ी बात यह है कि जो व्यक्ति यह कहे कि मैं दुर्घटनावश हिन्दु हूॅ राष्ट्रपति कोविंद उसका उल्लेख कैसे कर सकते हैं ? क्योंकि हिन्दु का मतलब इस देश की संस्कृति और राष्ट्रीयता से है। जिसकी पुष्टि भारत का सर्वोच्चय न्यायालय कर चुका है। रहा सवाल इंदिरा गॉधी का तो भ्रष्टाचार को संस्थागत रूप देना, वंशवाद को सिद्धांत बतौर राजनीति में प्रतिष्ठित करने के लिये इन्दिरा गॉन्धी ही मूलतः जिम्मेदार है। संविधान या राष्ट्र के प्रति निष्ठा और समर्पण की जगह यह सब खानदान विशेष के लिये होना चाहिये, यह सब इन्दिरा गॉधी के दौर में 'खुला खेल फर्रूखावादी' की तर्ज पर हुआ। संवैधानिक संस्थाओं की गरिमा नष्ट की गई और उनमे अपने हिसाब से काम करने वाले लोग बैठाये गये, इसके चलते पंडित जी के शब्दों में राष्ट्र की विराट शक्ति का ह्रास हुआ जिसके चलतें राष्ट्र एक गहरे दलदल में फस गया और उनके उत्तराधिकारी लूट को ही अपना अभिष्ट मानने लगे। बडी बात जिन लोगों को यह है कि नए राष्ट्रपति से ऐसी शिकायत है, तो उनके पास इस बात का क्या जवाब है कि एक खानदान के सिवा सुभाषचंद्र बोस और सरदार पटैल की महत्ता को रेखांकित किया जा रहा है। तो भी इनके पेट में दर्द होता है, कि सरदार पटेल हमारी विरासत है, जो हमसे छीनी जा रही है। गॉधी के बारे में दृष्टिकोण ऐसा है जैसे गॉधी कोई इनकी निजी प्रापर्टी हो। ऐसे तत्वों को यह बखूबी पता होना चाहिए कि वर्तमान दौर में चाहे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हो या राष्ट्रपति कोविन्द हो, वह संघ की पृष्ठभूमि के है, इसलिये वह कोई बात संघ की दृष्टि से ही कहेंगे। यानी जिन्होने राष्ट्र को सही दिशा देने का प्रयास किया है, उन्ही का स्मरण करेंगे। इसके लिए उन्हें जनादेश भी प्राप्त है। ऐसे लोगों को कोई भी आलोचना के पहले ऐसे लोगों को अपना दौर भी याद कर लेना चाहिए।

लक्ष्मन रेखा पार करता मीडिया

चौबीस घण्टे के समाचार चैनल देश में कई तरह की समस्याओं को जन्म दे रहे हैं। सनसनीखेज खबरों की होड़ में वे अक्सर लक्ष्मन रेखा को पार कर जाते है। जो उन्होने खुद अपने लिये खीची है। बीते हफ्ते आतंकचादी मशूद अजहर का एक ध्वनि संदेश सभी चैनलों, अखबारों और न्यूज वेवसाइटों के पास पहुचा। 6–7 मिनट के इस संदेश में प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी से लेकर उत्तर प्रदेश मे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तक के लिये जहर भरा हुआ था। इसमे देश के लिये धमकी और कट्टरपन्थी मुसलमानों के लिये एक छिपा हुआ संदेश था। टीआरपी की होड़ में कहें या अपरिपक्वता, छोटे–बड़े सभी चैनलों ने इसे फौरन सुनाना शुरू कर दिया। क्रान्तिकारी चैनल ने बिना संपादित किये पूरा संदेश प्रसारित कर दिया। आतंकवादी संगठन चाहते भी यही थे और उनकी यह इच्छा हमारे देश के समाचार माध्यमों ने पूरी कर दी। ऐसा पहली बार नही हुआ इससे पहले सैयद सलाहुद्दीन जैसे दुर्दात आतंकवादी से लेकर हुर्रियत के छोटे–बड़े पाकिस्तानपरस्तों के संदेश भारतीय न्यूज चैनलों पर आते रहे हैं। ऐसे वक्त जब दुश्मन देश भारत के खिलाफ दुष्प्रचार की लड़ाई छेड़े हुये है और हमारा मीडिया यदि उन्हे मंच देता रहे तों यह चिंता की बात है। आजकल भारतीय अखबार, चैनल और वेबसाइट चीन के दुष्प्रचार का माध्यम भी बने हुये है। सीक्किम सीमा पर भारत के हाथों मुह की खानी के पश्चात चीन भी दुष्प्रचार का सहारा ले रहा है। भारतीय मीडिया का एक तबका जाने अनजाने में उसका मददगार बन रहा है। जब विवाद शूरू हुआ था, तभी लगभग सभी ने खबर दी थी कि चीन की सेना ने भारतीय सेना के बंकर तबाह कर दिये। जबकि वह दावा बिलकुल गलत था। इसके बाद भी चीनी सेना के युद्धाभ्यास की ज्यादातर तस्वीरें और खबरे वही के मीडिया के हवाले से आई। जबकि उनमे से ज्यादातर पुरानी और दूसरी जगहों की थी। जब भी चीन की बात आती है, भारतीय मीडिया के एक तबके में एक खास तरह की स्वामिभक्ति झलकने लगती है। यह वह वामपंथी तबका है जो चीन को आदर्श राज्य के रूप में देखता है और मानता है कि जो वह कर रहा है, वही सही है। वे इस बात को खुलकर नही कह सकते तो इशारों में ही समझाते है कि देखो, कैसे चीन की सैन्य शक्ति भारत के मुकाबले कई गुना ज्यादा है। लेकिन यह नही बताते कि रणनीतिक और कूटनीतिक तौर पर भारत ने चीन के पास जो घेरा बंदी की है, उसके कारण वह बौखलाया है। माकपा के मुख्यपत्र 'पीपुल्स डेमोक्रसी' ने तो एक तरह से खुलकर लिखा कि सिक्किम में भारत का रूख गलत और चीन का सही है। लेकिन भारतीय मीडिया ने इस राय पर एक बार भी सीताराम येचुरी से सवाल पूछने की जरूरत नही समझी कि क्या उनका दल एक बार फिर से 1962 के युद्ध वाली गद्दारी दोहराने की फिराक में है। वामपंथियों जैसी ही स्थिति गॉधी परिवार की भी मालूम होती है जिसका चीन के राजदूत के साथ कुछ ज्यादा उठना बैठना हो रहा है। पीट–पीट कर हत्या यानी लिचिंग की कुछ घटनाओं को तूल देकर मीडिया यह जता रहा है कि पूरे देश में आज मुसलमान असुरक्षित है और हिन्दुत्ववादी संगठन उन्हे निशाना बना रहा है। लेकिन जैसे ही इस धारणा को ताड़ने वाली कोई खबर आती है, मामला रफा–दफा हो जाता है। आजमगढ़ के सरायमीर में शिवकुमार नाम के लड़के को तालीबान की तरह हाथ–पैर में बिजली के तार बॉध कर झटके दिये गये। इसका वीडियों दिल दहलाने लायक था। पीड़ित का कहना है कि मुसलमान लड़के मोदी और योगी को गालियां दे रहे थे, जब उसने रोका तो झगड़ा हुआ। उधर आपातकाल के अत्याचारों पर बनी फिल्म 'इन्दु सरकार' के खिलाफ कांग्रेसी विरोध प्रर्दशन जारी है। फिल्म के निर्देशक मधुर भण्ड़ारकर ने राहुल गॉधी को ट्वीट करके पूछा कि मुझे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कब मिलेगी ? लेकिन वास्तव में यह सवाल मीडिया के लिये है। पुणे और नागपुर में जब फिल्म की यूनिट पर हमला हुआ , तब उन्हे होटल में नजर बंद कर दिया गया तो दिल्ली के किसी चैनल और अखबारों ने खबर तक छापने की जरूरत तक नही समझी जो मीडिया अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर देश की आत्मा और इतिहास पर चोट करने वालो के साथ खड़ा हो जाता है, वह आपातकाल पर बनी फिल्म का साथ क्यों नही दे पा रहा है ? आधे–अधूरे मन से खबरें जरूर देखने को मिल रही है, लेकिन वैसी बैचेनी नही दिखती जैसा रानी पद्मावती पर फिल्म बना रही यूनिट पर हमले के वक्त हुआ था उधर सच दिखाने वाले एनडीटीवी का सच सामने आ गया। आयकर ट्रिब्यूटल ने हवाला के मामले में उसे दोषी ठहराया है। इसके तहत उसे भारी जुर्माना भरना पड़ सकता है। कुछ अंग्रेजी और कारोबारी अखबार को छोड़ दे तो मीडिया ने इस पर चुप्पी साधे रखी है। वे दिग्गज संपादक और पत्रकार भी मुंह सिले रहे जो एनडीटीवी पर छापों को प्रेस की आजादी पर हमला बता रहे थे।

सामयिक मुद्दों पर मीडिया के रूख और रूखाई की परतें खंगालता यह स्तंभ समर्पित है विश्व के पहले पत्रकार कहे जाने वाले देवर्षि नारद के नाम पर मीडिया के वरिष्ठ पदों पर बैठे, भीतर की खबर रखने वाले पत्रकार इस स्तंभ के लिये अज्ञात रहकर योगदान करते है और इसके बदले उन्हे किसी प्रकार का भुगतान नही किया जाता है।

एक सप्ताह में म्यांमार से 22000 रोहिंग्या मुसलमान भागे

संयुक्त राष्ट्र ने सोमवार को अपनी रिपोर्ट में कहा कि, उतरी राखिने राज्य में सेना द्वारा हिंसक कार्रवाई के बाद से पिछले 3 सप्ताह में लगभग 65000 रोहिंग्या मुसलमानों ने म्यांमार से भागकर बांग्लादेश में शरण ली। मानवधिकार समूह का कहना है कि, सैन्य अभियान के बाद रोहिंग्या समुदाय के लोगों के घर छोड़कर बांग्लादेश में शरण लेने की संख्या में तेजी से बढ़ोत्तरी हुई है।

सूचना

कृपया आप ~~अपना~~ ई–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकौशल संदेश के ई मेल पर भेजने का कष्ट करें ताकि 'महाकोशल संदेश' आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । –

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com